गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण को भारत के दूसरे चीतों (Cheetas) के घर के रूप में विकसित करने की घोषणा

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार ने गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण को भारत के दूसरे चीतों (Cheetas) के घर के रूप में विकसित करने की घोषणा की है।
- ज्ञातव्य हो कि मध्य प्रदेश स्थित 'कुनो राष्ट्रीय उद्यान' पहले ही 'चीता' के घर के रुप में विकसित किया जा चुका है।
- मध्यप्रदेश सरकार के अनुसार 'गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण' में चीतों के लिए उपयुक्त तैयारी करने के बाद नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से मानसून के बाद चीतों का आयात किया जा सकता है।

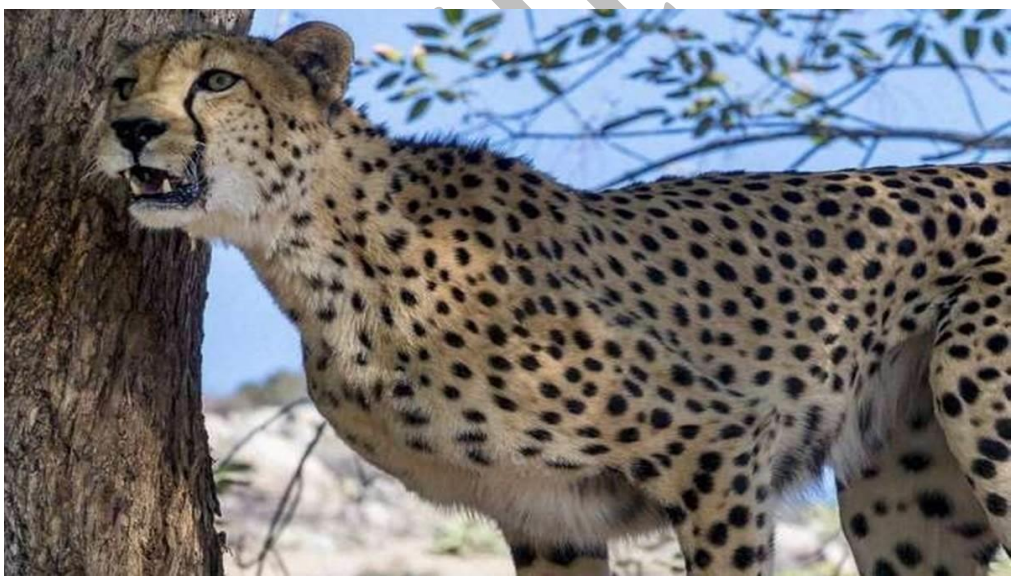

गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण ही क्यों?

- गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण, मध्यप्रदेश में राजस्थान की सीमा के करीब मंदसौर और नीमच जिलों में 368.62 वर्ग किमी में फैला हुआ क्षेत्र है।

Result Mitra

- यह अभ्यारण चट्टानी पठार पर स्थित है जो 'चंबल नदी अभ्यारण' को लगभग दो भागों में विभाजित करती है।
- 1960 में चंबल नदी पर निर्मित 'गाँधी सागर बाँध' इसी अभ्यारण क्षेत्र में स्थित है जिसमें इसके जलाशय के कुछ हिस्से भी आते हैं।
- गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण का पारिस्थितिकी तंत्र सवाना पारिस्थितिकी क्षेत्र के समान है जिसमें सूखे पर्णपाती पेड़ों और झाड़ियों के साथ खुले घास के मैदान शामिल हैं।
- इस अभ्यारण की नदी घटियां सदाबहार वन से भरपूर हैं।
- वन्यजीव अधिकारियों के अनुसार गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण की भौगोलिक स्थिति, जलवायु एवं पारिस्थितिकी तंत्र इसे चीतों के लिए आदर्श निवास स्थान 'मसाई मारा' की तरह बनाता है।
- 'मसाई मारा' केन्या में स्थित एक राष्ट्रीय अभ्यारण है जो सवाना जंगल सहित चीतों, शेरों, जिराफो जैसे वन्यजीव के आदर्श आवास के रूप में प्रसिद्ध है।
- वन्यजीव अधिकारियों के अनुसार 'कुना राष्ट्रीय उद्यान' के बाद चीतों के लिए 'गाँधी सागर राष्ट्रीय उद्यान' आदर्श आवास के रूप में उभर सकता है।
- वन्यजीव अधिकारियों के अनुसार गाँधी सागर अभ्यारण में चीता के आवास को लगभग 2,000 वर्ग किमी क्षेत्र तक विस्तारित किया जा सकता है लेकिन इसके लिए राजस्थान के भैंसरोडगढ़ अभ्यारण के साथ-साथ मध्यप्रदेश के मंदसौर और नीमच जिलों के क्षेत्रीय प्रभागों को विस्तारित करने की आवश्यकता होगी।
- यानी इस क्षेत्र के विस्तार के लिए राजस्थान और मध्यप्रदेश को 'एकीकृत प्रबंधन योजना' के तहत काम करना पड़ेगा।

गाँधी सागर अभ्यारण की तैयारी-

- वर्तमान में गाँधी सागर वन्यजीव अभ्यारण में 17.72 करोड़ की लागत से लगभग 64 वर्ग किमी क्षेत्र को चीते की आवास के रूप में विकसित किया गया है।
- चीतों के आगमन के बाद उनके सुरक्षित आवास के लिए लगभग 1 वर्ग किमी का बाड़े (बोमा) का निर्माण किया गया है जो चार बराबर भागों में बांटा गया है।
- यहाँ एक अस्पताल (चीतों के लिए) के निर्माण के अलावा मौजूदा पारिस्थितिकी गतिशीलता का आकलन के लिए शाकाहारी और शिकारी वन्यजीव की व्यापक स्थिति का आकलन किया जा रहा है।

चुनौती-

- गांधी सागर वन्यजीव अभ्यारण में चीतों को जीवित रखने के लिए सर्वप्रथम उनके शिकार आधार में वृद्धि करना है।

Result Mitra

- अर्थात इस अभ्यारण में ऐसे जानवरों की संख्या में वृद्धि करना है जिनका 'चीता' आसानी से शिकार कर सकते हैं।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान के अनुसार नर चीता अपने भाई-बहन सहित लगभग तीन से पाँच सदस्यों के साथ जबकि मादाएं अधिक समय एकान्त जीवन बिताती हैं।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार एक चीता परिवार (लगभग 5 सदस्य) के लिए लगभग 350 'अनगुलेट्स की आबादी' की आवश्यकता होती है।
- अनगुलेट्स जानवरों का एक विविध समूह है जिसमें बड़े स्तनधारी, हिरण, चीतल तथा चिंकारा जैसे जीव शामिल है।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान के आकलन के अनुसार गाँधी सागर में 7 से 8 चीतों के परिवार के शिकार आधार के लिए लगभग 1500 चीतल, 1000 काले हिरण सहित 350 चिंकारा को स्थानांतरित करने की आवश्यकता है।
- मध्यप्रदेश वन्यजीव अधिकारियों के अनुसार गाँधी सागर अभ्यारण में कान्हा, सतपुड़ा और संजय गाँधी अभ्यारणों से चीतल और गौर (भारतीय बाइसन) का स्थानांतरण किया गया है।
- हालांकि गाँधी सागर अभ्यारण्य में चीतों के लिए अपर्याप्त शिकार अधार अभी भी एक जटिल मुद्दा बना हुआ है जिसे पूरा करने के लिए अधिकारी 5000 मृगों को स्थानांतरित करने पर जोर दे रहे हैं।

अन्य चुनौतियां-

- कुनो नेशनल पार्क की तरह गाँधी सागर अभ्यारण में तेंदूओं की आबादी ज्यादा होने के कारण शिकार के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ने की संभावना है।
- इसके अलावा इस अभ्यारण में कई अन्य शिकारी जीव जैसे स्लॉथ मालू, धाड़ीदार लकड़बगघे, भूरे भेड़िये, सियार, लोमडियां सहित दलदली मगरमच्छ हैं जो चीतों के शिकार आधार को नुकसान पहुंचाने सहित जंगली मुठभेड़ को बढ़ाएंगे जो इस क्षेत्र में चीतों के विकास को प्रभावित कर सकता है।

कुनो राष्ट्रीय उद्यान-

- कुनो राष्ट्रीय उद्यान, मध्यप्रदेश में स्थित एक राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभ्यारण है।
- कुनो राष्ट्रीय उद्यान का नाम इसके क्षेत्र से होकर गुजरने वाली 'कुनो नदी' के नाम पर रखा गया है।
- 1981 में स्थापित, 344.68 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला यह अभ्यारण मध्यप्रदेश के श्योपुर और मुरैना जिले में फैला हुआ है।

Result Mitra

- वर्ष 2018 में इस उद्यान को राष्ट्रीय उद्ययान का दर्जा दिया गया।
- यह राष्ट्रीय अभ्यारण भारतीय तेंदुआ, अफ्रीकी-चीता, जंगली बिल्ली, चीतल, सांभर, नीलगाय, चिंकारा और काला हिरण के
- आवास के रूप में जाना जाता है।
- इसके अलावा यह अभ्यारण मगरमच्छ, घड़ियाल, भारतीय सॉफ्टशेल कछुए जैसे सरीसृप सहित 129 से अधिक पक्षियों की प्रजातियों का निवास स्थल है।

गाँधीसागर बाँध-

- गाँधी सागर बाँध, भारत के मध्यप्रदेश में चंबल नदी पर बना है जो मंदसौर जिले में स्थित है।
- 62.17 मीटर ऊँचाई वाले इस बाँध के निर्माण की आधारशिला वर्ष 1954 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने रखी थी जो 1960 में बनकर तैयार हुआ।
- इस बांध की जल भंडारण क्षमता 7.322 विलियन क्यूबिक मीटर है।
- इस बाँध के निचले हिस्से में एक पनबिजली स्टेशन है जो लगभग 564 गीगावॉट बिजली का उत्पादन करता है।
- बिजली उत्पादन के बाद, यहाँ से छोड़ा गया पानी लगभग 427,000 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि की सिंचाई की जाती है।

भारत में चीता-

- विभिन्न रिपोर्टस के अनुसार मुगलकालीन भारत में लगभग 1000 से अधिक चीते थे लेकिन ब्रिटिश उपनिवेश कालीन समय में बढ़ती शिकारी गतिविधियों ने इसकी संख्या में कमी ला दी।
- वर्ष 1952 में 'चीता' को आधिकारिक रुप से विलुप्त घोषित कर दिया।
- वर्ष 2022 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2022 में चीतों को भारत में वापस लाने के लिए नामीबिया के साथ चीतों के पुनरुत्पादन और फोरेंसिक विज्ञान सहयोग पर समझौता किया।
- इस समझौते के तहत 17 सितंबर 2022 को 12 चीतों को नामीबिया से लाकर कुनो नेशनल पार्क में छोड़ा गया।
- वर्ष 2023 के जनवरी में भारत में दक्षिण अफ्रीका के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किया जिसके तहत दक्षिण अफ्रीका अगले 10 वर्षों तक भारत को प्रति वर्ष 12 चीते की आपूर्ती करेगा।
- वर्तमान में भारत में कुल 20 चीते (शावक के साथ) है जो 'कुनो नेशनल पार्क' में है।

Result Mitra

- भारत सरकार द्वारा यह अभियान 'प्रोजेक्ट चीता' के अन्तर्गत आता है।

'प्रोजेक्ट चीता'-

- वर्ष 2009 में भारत सरकार ने भारतीय वन्यजीव अभ्यारण की मदद से सितंबर 2022 में 'प्रोजेक्ट चीता' नामक महत्वाकांक्षी प्रयास लांच किया जिसका मुख्य उद्देश्य अफ्रीकी चीतों को भारत लाकर उसका पुनरुत्पादन करना था।

Result Mitra